

अध्याय 18

नृत्य मेरे आस-पास



हमारे देश के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अनोखी संस्कृति और परंपरा है। इसके साथ ही उनका अपना विशिष्ट संगीत और नृत्य भी होता है।



राजस्थान का चिरमी नृत्य



सिक्किम का चाम नृत्य



आंध्र प्रदेश का कोम्मू कोया नृत्य



पंजाब का सम्मी नृत्य



0438CH18

गतिविधि 18.1 मेरा नृत्य और प्रकृति

हमारे देश के कई स्थानीय नृत्य प्रकृति से जुड़े हुए हैं।

उदाहरण के लिए, आपने संगीत की कक्षा में एक कन्नड़ गीत सीखा था, ‘आदोना बन्नी कन्ना मुच्चाले थूगोना बन्नी उय्यले।’ यह गीत पेड़ों, पक्षियों और प्रकृति का वर्णन करता है। आप प्रकृति से जुड़े कुछ अन्य गीत भी चुन सकते हैं, जैसे— रबिंद्र संगीत का ‘फूले फूले धोले धोले...’ जो फूलों, नदियों और पक्षियों का वर्णन करता है।

अब आप सभी नृत्य चरणों यथा सौम्य और प्रबल गति, हाथ की मुद्राओं तथा चेहरे की भाव-भंगिमाओं को मिलाकर गीत के ताल पर नृत्य करने का प्रयास करें।

शिक्षक-संकेत

संगीत कक्षा से किसी प्रकृति गीत का संदर्भ लें और उसका अर्थ समझाएँ। पिछले पृष्ठ पर दिए गए क्यूआर कोड में उपलब्ध प्रकृति गीतों का संदर्भ लें।



★ गतिविधि 18.2 अपना क्षेत्रीय नृत्य सीखना

अपनी क्षेत्रीय नृत्य शैली, पारंपरिक संगीत और अन्य कला रूपों के विषय में जानकारी प्राप्त करें। उस नृत्य शैली के साथ किस प्रकार के संगीत की संगति होती है? क्या आपको अपने क्षेत्र में स्थानीय नृत्य से संबंधित चित्र या कलाकृति दिखाई देते हैं?

अब अपने क्षेत्र के नृत्यों में किसी एक को चुनें और उसका प्रदर्शन करें।

शिक्षक-संकेत

विद्यार्थियों को किसी पारंपरिक नृत्य शैली के प्रदर्शन को देखने के लिए ले जाना, उनकी उस नृत्य शैली के विभिन्न तत्वों को समझने में सहायता करेगा। इस प्रदर्शन पर कक्षा में चर्चा की जा सकती है जिससे विद्यार्थी नृत्य प्रदर्शन के बारे में अपनी सोच और भावनाओं को साझा कर सकें।

